Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

# महाराष्ट्र के किसानों की कृषि समस्याएँ और उनके समाधान का अध्ययन

**डॉ. घोलप एन. एन.**
भूगोल विभाग
आर्ट्स, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, सटाणा
ता. बागलाण, जि. नाशिक

**प्रस्तावना**

भारत की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है। आज देश की आधी से अधिक जनसंख्या अपने जीवन-यापन के लिए कृषि पर निर्भर है। इससे कृषि के महत्व का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। कृषि के माध्यम से किसान न केवल देश को भोजन, चारा तथा विभिन्न उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चा माल उपलब्ध करवाते हैं, बल्कि अनेक लोगों को रोजगार भी प्रदान करते हैं। किंतु दुर्भाग्य की बात है कि इसी देश में कई बार किसान स्वयं ही उपजीविका के संकट का सामना करते हैं।कृषि एक प्राथमिक आर्थिक गतिविधि है जिसमें फसलों का उत्पादन, सब्जियों-फलों-फूलों की खेती तथा पशुपालन शामिल होता है। विश्व की लगभग 50% जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। भारत में लगभग सभी राज्यों में खेती होती है, परंतु महाराष्ट्र राज्य ने कृषि क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इसे एक प्रयोगशील राज्य माना जाता है। यद्यपि महाराष्ट्र को आर्थिक रूप से विकसित राज्य माना जाता है। परन्तु यहाँ के किसानों की स्थिति संतोषजनक नहीं है। आज किसान अनेक समस्याओं से घिरा हुआ हैकभी प्राकृतिक आपदाएँ साथ नहीं देतीं, कभी कृषि उत्पादों को उचित बाजारभाव नहीं मिलता, तो कभी सरकारी नीतियाँ भी किसानों के प्रतिकूल साबित होती हैं। इन समस्याओं का बोझ उठाते-उठाते किसान आत्महत्या करने तक विवश हो जाता है।किसानों की आत्महत्याओं के पीछे अनेक कारण हैं। कर्ज़बाज़ारी, अपर्याप्त व अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि, फसलों के बदलते दाम, खाद-बीज के बढ़ते दाम इत्यादि। इन कारणों से महाराष्ट्र में किसानों की समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं और खेती करना उनके लिए घाटे का सौदा बनता जा रहा है। विशेषकर मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्रों में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। कई किसान यहाँ जीवनयापन के लिए भी संघर्ष कर रहे हैं। फलतः भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाला कृषि व्यवसाय डगमगाता दिखाई देता है।

राज्य के सकल घरेलू उत्पादन (GSDP) में कृषि का योगदान लगभग 11.9% है। भौगोलिक परिस्थितियों के कारण महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था बड़े स्तर पर कृषि पर निर्भर है। राज्य में खाद्यान्न के साथ-साथ नकदी फसलों का भी बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। धान, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, प्याज़, कपास, गन्ना, मूंगफली, सूरजमुखी तथा सोयाबीन मुख्य फसलें हैं। आम, अंगूर, केला और संतरा प्रमुख फलों में शामिल हैं।राज्य का लगभग २४ % क्षेत्र दुष्कालग्रस्त है। कई भागों में सालभर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है, जिससे बारहमासी फसलें लेना संभव नहीं हो पाता। सिंचाई के अपर्याप्त साधन, कमजोर आधारभूत संरचना, तकनीकी ज्ञान की कमी और अपर्याप्त कृषि विस्तार सेवाएँ किसानों की उत्पादन क्षमता को सीमित करती हैं। कई ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों की खराब स्थिति के कारण किसान अपना उत्पादन उचित बाजार तक नहीं पहुँचा पाते। बाज़ार के अनावश्यक नियम, बिचौलियों का वर्चस्व और असंगठित बाज़ार संरचना भी किसानों की आय में बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। इसीलिए किसानों की समस्याओं को समझकर उनमें सुधार लाने के उद्देश्य से यह अध्ययन किया गया है।

*मुख्य शब्द :-किसान समस्याएँ, उपाययोजना, चुनौतियाँ*

Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 5.69
Online Available at www.cmrj.in
ISSN No. 2456-1665

**अध्ययन के उद्देश्य-**

1 महाराष्ट्र के कृषि क्षेत्र की समस्याओं का अध्ययन करना।

2 उत्पन्न होने वाली कृषि समस्याओं के समाधान खोजना।

3 कृषि क्षेत्र के समक्ष उभरी चुनौतियों का अध्ययन करना।

**अनुसंधान जानकारी का स्रोत-**

प्रस्तुत शोध-अभ्यास के लिए जानकारी संकलित करते समय द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके तहत विभिन्न संदर्भग्रंथ, सरकारी रिपोर्टें, कृषि पत्रिकाएँ, वेबसाइटें तथा अनुभवी किसानों से प्राप्त माहिती के आधार पर अध्ययन पूरा किया गया है।

महाराष्ट्र भारत के पश्चिम भाग में स्थित एक राज्य है। क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से महाराष्ट्र भारत का तीसरा तथा जनसंख्या के आधार पर दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। यह भारत के सबसे विकसित राज्यों में से एक है। महाराष्ट्र की सीमाएँ गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, कर्नाटक, गोवा तथा दादरा और नगर हवेली इस केंद्रशासित प्रदेश से जुड़ी हुई हैं। राज्य भारत के मध्य भाग में स्थित है और यह 72°36' पूर्व से 80°54' पूर्व देशांतर तथा 15°44' उत्तर से 22°06' उत्तर अक्षांश के बीच फैला हुआ है।

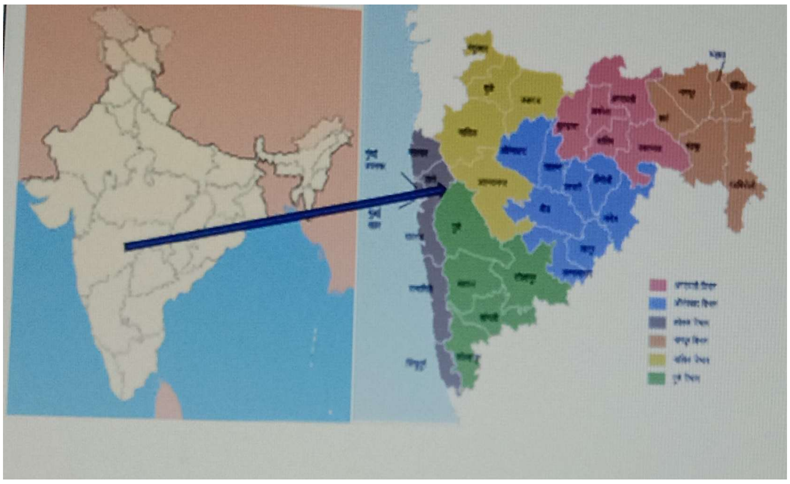

**अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान-**

औद्योगिक विकास के लिए कच्चा माल प्रदान करने का प्रमुख स्रोत कृषि क्षेत्र है। आर्थिक स्थिरता के लिए कृषि को अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। देश में आर्थिक असमानता दूर करने में कृषि विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यद्यपि पिछले कुछ दशकों में औद्योगिक और सेवा क्षेत्र का विकास होने के कारण कृषि का सापेक्ष हिस्सा घटा है, फिर भी भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज भी देश की ५५ % से अधिक कार्यरत जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि तथा उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि ही आजीविका का मुख्य साधन है।

बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए अन्न और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने की मूलभूत ज़िम्मेदारी कृषि क्षेत्र की ही है। भारत ने खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। कई उद्योग कृषि पर आधारित हैं—जैसे वस्त्र उद्योग के लिए कच्चा कपास, चीनी मिलों के लिए गन्ना, जूट मिलों के लिए जूट इत्यादि—जिससे औद्योगिक विकास को गति मिलती है।अतिरिक्त उत्पादन का निर्यात करके देश को आवश्यक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। जैसे चाय, कॉफी, मसाले, चावल आदि के निर्यात में भारत का बड़ा हिस्सा है। इन्हीं अनेक कारणों से कृषि को अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

**महाराष्ट्र के किसानों की समस्याएँ** –

महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था में कृषि का बड़ा योगदान होने के बावजूद किसान कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार हैं—

**१. मानसून पर निर्भरता-**

महाराष्ट्र की खेती बहुत हद तक मानसून पर निर्भर रहती है। मानसून का समय, उसका वितरण और वर्षा की मात्रा कृषि उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। लेकिन यदि कम या अनियमित बारिश हो जाए, विशेषतः मराठवाड़ा और विदर्भ में, तो सूखे की स्थिति पैदा होती है। इससे फसलों का उत्पादन घटता है और किसानों की आय पर गंभीर परिणाम होतो है। मानसून पर किसानों का नियंत्रण न होने के कारण खेती अनिश्चितता और जोखिमों से भरा व्यवसाय बन जाती है। इसलिए यह एक बड़ी समस्या है।

**२. पूँजी की कमी-**

खेती के लिए पर्याप्त पूँजी की आवश्यकता होती है, लेकिन किसानों के पास पूँजी की कमी रहती है। इस कारण वे खेती में आवश्यक सुधार नहीं कर पाते। कई किसान साहूकारों से ऊँचे ब्याज दर पर कर्ज लेते हैं, लेकिन फसल का उचित मूल्य न मिलने पर वे समय पर कर्ज चुका नहीं पाते और साहूकारों के अत्याचारों से परेशान होकर कई किसान आत्महत्या तक कर लेते हैं।स्थानीय और राष्ट्रीयकृत बैंकों से समय पर कर्ज न मिलने के कारण किसान आधुनिक तकनीक का उपयोग भी नहीं कर पाते, जिससे खेती का विकास रुक जाता है। पूँजी की कमी के कारण किसान बीज, खाद आदि समय पर खरीद नहीं पाते, जिससे उत्पादन घटता है। बैंक के ब्याज का बोझ भी किसानों के लिए भारी पड़ता है।

**३. छोटी कृषि भूमि-**

लगातार बढ़ती जनसंख्या और परिवारों के विभाजन के कारण जमीन छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटती गई है। इसके परिणामस्वरूप लगभग 50% किसान लघु और सीमांत किसान बन गए हैं। छोटी जमीन पर आधुनिक खेती और यांत्रिकीकरण आर्थिक रूप से लाभदायक नहीं होता। इससे उत्पादन क्षमता घटती है और किसानों की आर्थिक स्थिति खराब होती जाती है।

**४. विपणन और भंडारण की कमी-**

किसानों को अपने उत्पाद का उचित बाजार मूल्य मिले, इसकी कोई गारंटी नहीं होती। बाजार में कीमतों में लगातार उतार-चढ़ाव होता रहता है। उचित मूल्य पाने के लिए माल को कुछ समय तक सहेज कर रखना पड़ता है, लेकिन अधिकांश किसानों के पास भंडारण की सुविधा नहीं होती। इस कारण उन्हें मनमानी कीमत पर माल बेचना पड़ता है और कई बार भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इसके अलावा, परिवहन खर्च, बाजार की अव्यवस्था, बिचौलियों का हस्तक्षेप और व्यापारियों द्वारा मूल्य तय किए जाने के कारण भी किसानों को उचित भाव नहीं मिल पाता। पर्याप्त भंडारण न होने के कारण बड़ी मात्रा में उत्पादन नष्ट भी हो जाता है।

**५. अपूर्ण सिंचाई सुविधा-**

यदि खेती को सालभर पानी की सुविधा मिले तो कृषि का विकास बेहतर होता है और किसान वर्ष में दो–तीन फसलें ले सकते हैं। लेकिन महाराष्ट्र की लगभग 82% खेती पूरी तरह से मानसून पर निर्भर है। इससे कई क्षेत्रों में सूखा और पानी की कमी की समस्या पैदा होती है। कई जगहों पर किसानों के पास अपनी खुद की कुएँ या बोरवेल भी नहीं हैं। बिजली के 8–10 घंटे लोडशेडिंग जैसे प्रश्नों के कारण सिंचाई बाधित होते है, जिससे उत्पादन पर नकारात्मक परिणाम होतो है।

**६. खाद की कमी और बढ़ती कीमतें-**

उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को गोबर खाद और रासायनिक खाद की आवश्यकता होती है, लेकिन इनकी कीमतें अक्सर किसानों की सामर्थ्य से बाहर होती हैं। पूँजी की कमी के कारण किसान समय पर खाद खरीद नहीं पाते। कई बार गुणवत्तापूर्ण खाद भी समय पर उपलब्ध नहीं होती। रासायनिक खादों की महँगाई और कमी ने किसानों को परेशान कर रखा है।

**७. कृषि मजदूरों की समस्या--**

खेती में कई कार्यों के लिए मजदूरों की आवश्यकता होती है, लेकिन मजदूरी दर बहुत अधिक होने के कारण गरीब किसानों के लिए मजदूर रखना मुश्किल हो जाता है। मजदूर न मिलने से उत्पादन घटता है और आर्थिक नुकसान होता है।

**८. भूमि की उर्वरता में कमी**

उत्पादन बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता कई स्थानों पर घट गई है। पोषक तत्वों की कमी, लवणीयता तथा भूमि कटाव जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है और खेती आर्थिक रूप से लाभदायक नहीं रहती। जंगलों की कटाई, गलत सिंचाई पद्धती और भूमि–पानी प्रबंधन की त्रुटियों के कारण भी मिट्टी का स्वास्थ्य खराब हुआ है। परिणामस्वरूप उत्पादन क्षमता घटती है और किसान अधिक आय प्राप्त नहीं कर पाते।

**९. निकृष्ट बियाणे (बीज)-**

उत्तम बीजों में शुद्धता और अच्छी अंकुरण क्षमता होती है, लेकिन महाराष्ट्र में कई किसान पुराने व सहेजे हुए बीजों का उपयोग करते हैं, जिनमें यह गुण नहीं होते। इससे प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होता है। कई बार बीज अंकुरित नहीं होते और किसानों की मेहनत व्यर्थ जाती है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार उत्तम बीजों का उपयोग करने से उत्पादन 20–30% तक बढ़ सकता है। इसलिए अच्छे बीजों का अभाव किसानों के लिए एक बड़ी समस्या है।

**१०. प्रतिकूल मौसम**-

मौसम में लगातार हो रहे बदलाव के कारण फसलों में कई तरह की बीमारियाँ फैलती हैं, जिससे फसल नष्ट होने का खतरा बढ़ जाता है।रोगनियंत्रण के लिए दवाइयों की फवारणी आवश्यक होती है, लेकिन दवाइयों की अत्यधिक कीमतें साधारण किसानों की पहुँच से बाहर होती हैं। पूँजी के अभाव में किसान इनका उपयोग नहीं कर पाते, जिससे फसलें रोगग्रस्त होकर नष्ट हो जाती हैं और किसानों को आर्थिक नुकसान सहना पड़ता है।

**११. उत्पादन की कीमतों में उतार–चढ़ाव**-

कृषि उत्पादों के बाजारभाव में लगातार चढ़–उतार होना किसानों के लिए एक प्रमुख चुनौती है। बीज, खाद, मजदूरी और परिवहन जैसे खर्च लगातार बढ़ रहे हैं, परंतु फसलों को उतना मूल्य नहीं मिलता। कई बार जब फसल तैयार होती है, तब बाजार में भाव बहुत कम होते हैं, और किसानों को मजबूर होकर कम कीमत पर ही माल बेचना पड़ता है, जिससे उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। अस्थिर कीमतों के कारण किसानों को स्थिर आय नहीं मिल पाती।

**१२. अशिक्षित किसान-**
किसानों में शिक्षण और आधुनिक कृषि ज्ञान की कमी के कारण वे नए संकर बीज, खाद, कीटनाशकों का उचित उपयोग नहीं कर पाते। आधुनिक तकनीक न अपनाने के कारण उत्पादन भी कम होता है। पारंपरिक पद्धती से खेती करने से भूमि की उत्पादकता भी कम होती जाती है।
**१३. तकनीक का अभाव-**
आधुनिक कृषि तकनीक की जानकारी न होने के कारण किसान पुरानी पद्धतियाँ अपनाते हैं, जिससे उत्पादन घट जाता है। तकनीकी प्रशिक्षण और आधुनिक साधनों की अनुपलब्धता भी इस समस्या को बढ़ाती है।

**कृषि समस्याओं पर उपाययोजना** –
**१. जैविक (सेंद्रिय) खाद का उपयोग**-जैविक खाद के उपयोग से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और उत्पादन की गुणवत्ता भी सुधरती है।
**२. उचित कीट प्रबंधन**-ट्रैक्टर-चलित बूम स्प्रेयर, स्मार्ट स्प्रे तकनीक आदि का उपयोग करके प्रभावी कीट नियंत्रण किया जा सकता है।
**३. बाजार सुधार**-थोक बाजार से सीधे बिक्री, किसान उत्पादक कंपनियाँ (FPO), ई–नाम प्लेटफॉर्म और न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) जैसी योजनाओं का विस्तार आवश्यक है।
**४. सिंचाई सुविधाओं का विस्तार**-ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर, जलसंधारण उपाय, भूजल पुनर्भरण जैसी पद्धतियों को बढ़ावा देना चाहिए। सिंचाई सुलभ करने के लिए शेततलाव (फार्म पॉन्ड) निर्माण पर अनुदान बढ़ाया गया तो पानी की उपलब्धता बेहतर हो सकती है।
**५. आधुनिक तकनीक का उपयोग**-ड्रोन तकनीक, स्मार्ट खेती, आधुनिक मशीनरी और उपकरणों के उपयोग से खेती उत्पादक
और सुगम हो सकती है। इसके लिए किसानों में जागरूकता और मानसिकता निर्माण आवश्यक है।
**६. ऋण सुविधा और वित्तीय सहायता**-राष्ट्रीय बैंकों और सहकारी संस्थाओं को किसानों को समय पर और कम ब्याज दर पर कर्ज उपलब्ध कराना चाहिए। फसल कर्ज (पीक लोन) पर ब्याज सब्सिडी समय पर मिलने के लिए भी उचित व्यवस्था जरूरी है।
**७. बाजार और भंडारण सुविधा**-ग्रामीण स्तर पर भंडारण केंद्र और कोल्ड स्टोरेज की स्थापना से शेतमाल लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। इससे किसान उचित समय पर बेहतर बाजार भाव प्राप्त कर सकते हैं।
**८. शासकीय योजनाओं का प्रभावी संचालन**-महाडीबीटी पोर्टल पर उपलब्ध प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कृषि स्वावलंबन योजना जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन करके किसानों को वास्तविक लाभ पहुँचना चाहिए।
**९. शिक्षा और प्रशिक्षण**-आधुनिक कृषि पद्धतियाँ, फसल प्रबंधन, नई तकनीक तथा सरकारी योजनाओं के बारे में किसानों को प्रशिक्षण देकर जागरूक करना आवश्यक है।
**१०. कृषि–सहायक व्यवसायों का विकास**-दुग्ध व्यवसाय, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, पोल्ट्री, मत्स्यपालन आदि क्षेत्रों के विकास पर ध्यान देना चाहिए। अधिकांश किसान पहले से इन व्यवसायों से जुड़े होते हैं, इसलिए इनसे उन्हें सीधा लाभ मिल सकता है। इसके लिए किसानों में जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।
**११. आधुनिक तकनीक और सरकारी योजनाओं का उपयोग**-किसान यदि आधुनिक तकनीक, यांत्रिकीकरण तथा सरकारी योजनाओं का प्रभावी उपयोग करें, तो खेती अधिक लाभदायक बन सकती है।

**कृषि के सामने प्रमुख चुनौतियाँ**

- बिखरी हुई और छोटी कृषि भूमि के कारण उत्पादन सीमित रह जाता है।
- कुछ क्षेत्रों की मिट्टी में उच्च क्षारता की समस्या।
- विद्युत आपूर्ति की कमी।
- जलवायु परिवर्तन का प्रतिकूल प्रभाव।
- बाजार में बिचौलियों की बढ़ती भूमिका।
- सिंचाई की कमी
- ऋण की समस्या
- बाजार और मूल्य
- भंडारण और परिवहन
- प्रौद्योगिकी तक सीमित पहुँच
- ज्ञान का अभाव

**निष्कर्ष-**

महाराष्ट्र की कृषि मुख्यतः लघु और सीमांत किसानों पर आधारित है, जिन्हें प्राकृतिक और मानवजनित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।अपर्याप्त जागरूकता, पूँजी की कमी, तकनीक का कम उपयोग, और सरकारी सेवाओं की सीमित पहुँच के कारण समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। किसानों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य न मिलने से वे अब खेती से दूर होकर अन्य व्यवसायों की ओर रुख कर रहे हैं। बड़े पैमाने पर ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन हो रहा है, जिससे भविष्य में किसानों की संख्या कम होने की आशंका है। हालाँकि इन समस्याओं को पूरी तरह दूर करना संभव नहीं है, लेकिन **शाश्वत खेती, आधुनिक तकनीक, जलसंधारण, उचित मार्गदर्शन, तथा सरकार–वित्तीय संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय** अपनाने से इन समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

**संदर्भ**

1. Singh R.D. And Mehrotra M. K. (1973) "Problem Of Credit And Indebtedness With The Small And Marginal Farmers And Agricultural Labourers", Indian Co-Operative Review, Vol. 10.
2. .Ramesh Golait (2007) "Current Issues In Agriculture Credit In India: As Assessment" Reserve Bank Of India Occasional Papers, Vol. 28, No. 1, Summer 2007.
3. ए. बी. सवदी – द *मेगा स्टेट महाराष्ट्र* (२०१७ )
4. Singh Sandhu :Agriculture Problem In India ,Himalaya (१९९१)
5. डॉ.विजया साळुंखे: कृषी भूगोल (२००३ )
6. Adhyapak Daate Pradhyapak Saudate: Sugam Sheti Bhuvdgyansn

**7.** Khatib K.A: Agriculture Geography Of India

**8.** Husain Masjid: Agriculture Geography

**9.** Adhyapak Saudi Ani Hardikar: Economics Geography

**10.** Singh R.D. & Mehrotra M.K. (1973), *Indian Co-Operative Review*, Vol.10

**11.** Ramesh Golait (2007), *RBI Occasional Papers*, Vol. 28, No. 1

**12.** Prof. Vikas V. Ade"Trends and Causes of Farmers Suicide in Maharashtra State, India "

**13.** . Bisen D.K and Kudnar N.S. (2013): The production, export and cachment areas market of onion in indian agriculture, Research Expo International Interdisciplinary Journal, Volume III, Issue IV, pp-39-44.

**14.** Perceval, M., Ross, V., Kõlves, K. et al. (2018) Social factors and Australian farmer suicide: a qualitative study. BMC Public Health 18, 1367. https://doi.org/10.1186/s12889-018-6287-7

**15.** Baluswami N (1974) "An empirical study on rural indebtedness", Indian co-operative review, Vol. 12.

**16.** Kalpana Wilson (2002) "Small Cultivators in Bihar and 'New Tehchnology choice or compulsion?" Economic and political weekly, March, 2002.

**17.** Patil Balasaheb Vikhe (2005), "Rural Banking: Problems of Localized Banking Institutions", Economic political weekly – 2005.